सरीसृप

(REPTILES)

रमेशचन्द्र 'प्रेम'

1989

आत्माराम एण्ड संस
दिल्ली-110006

SARISRAP
(Reptiles)
by
Ramesh Chandra 'Tarun'

प्रकाशक
आत्माराम एंड संस
कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

शाखा
17-अशोक मार्ग, लखनऊ

मूल्य : 8 रुपये
संस्करण : 1989

मुद्रक

क्रम

सरीसृपों का युग

यदि हम पृथ्वी के लम्बे इतिहास पर दृष्टि डालें तो हमें अनेक अनोखे और विचित्र दृश्य दिखायी देंगे। आरम्भ में यह धरती आग का एक गोला थी, लेकिन

दानवसरट

धीरे-धीरे इसकी गर्मी कम हुई और इस पर समुद्र बने। इन समुद्रों के गर्म पानी ने पृथ्वी के अधिकांश भाग को अपने नीचे ढक लिया। जो भूमि बची वह सूनी और वीरान थी। उसी समय समुद्रों के गर्म जल में जीवों का जन्म हुआ। कुछ ऐसे छोटे और सरल जीव बने जो पानी में तैर सकते थे और रेंगकर एक जगह से दूसरी जगह जा सकते थे।

जब जल में ये जीव रहते थे, तब थल की दुनिया बिलकुल अँधेरी थी। पृथ्वी

की कठोर भूमि में उस समय कोई अंकुर नहीं फूटा था, उसकी चट्टानों या समत मैदानों में कोई जीव रेंगता दिखायी नहीं देता था, आकाश में कोई पक्षी या कीट पतंग नहीं उड़ता था।

इसी प्रकार करोड़ों वर्ष बीत गये। अन्त में अब से लगभग 32-33 करोड़ वर्ष पूर्व जीवों ने सूखी भूमि पर पांव रखना और यहां की हवा में सांस लेना आरम्भ किया। ऐसा करके उन जीवों ने इस दुनिया का रूप ही बदल दिया। लेकिन, ये जीव खुशी से भूमि पर नहीं आये। उस समय धरती की सतह पर निरन्तर परिवर्तन हो रहा था। समुद्र सूख रहा था और ऊँचे पर्वत बन रहे थे। जहां पानी कम हुआ वहां के जीव सूखी धरती पर आने लगे। धीरे-धीरे उनके शरीर के अंगों में भी उसी वातावरण के अनुकूल परिवर्तन होने लगा। जो जीव पानी का जीवन छोड़कर धरती पर आए, उन्हें 'आदिम उभयचर' कहा गया।

आरम्भ में इन उभयचरों का काफी समय पानी के भीतर ही व्यतीत होता था. लेकिन कभी-कभी ये धरती पर भी आते थे। बाद में जब जल के भीतर भोजन की कमी हो गई तो उन्होंने अपना अधिकांश समय सूखी धरती पर बिताना शुरू किया और अपने को इसी वातावरण के अनुकूल बना लिया।

आदिम उभयचर

अन्त में एक समय ऐसा भी आया जब कुछ जीव अपना सारा समय सूखी धरती पर ही बिताने लगे। धरती पर रहने वाले यही जीव सरीसृप कहलाये। ये जीव रेंगकर चलते थे, इसलिए इन्हें रेंगने वाले जीव भी कहा जाता है।

सरीसृप अब से लगभग 20 करोड़ वर्ष पहले बने। ये जीव बड़े महत्वपूर्ण। यदि हम पृथ्वी के इतिहास पर नजर डालें तो हमें पता चलेगा कि पूरे मध्य युग (मीजोजोइक एंज) में लगभग 12 करोड़ वर्षों तक सारी धरती पर

इन्ही सरीसृपों का साम्राज्य बना रहा । ये सरीसृप कई प्रकार के थे । प्रकृति के महान् आश्चर्य 'दानवसरट' भी उसी काल मे जल, थल और वायु मे निडर होकर विचारा करते थे । ये दानवसरट इतने विशाल थे, इतने शक्तिशाली थे कि लगभग 10 करोड़ वर्षों तक सारी पृथ्वी पर इन्ही का एकछत्र राज्य रहा ।

लेकिन पृथ्वी सदा बदलती रही है । उसकी सतह पर फिर परिवर्तन शुरू हुए । गर्म वायुमण्डल ठण्डा होने लगा । ठण्डे रक्त वाले दानवसरट इतनी ठण्ड सहन नही कर सकते थे । समुद्र और नदियाँ फिर से सूखने लगी । जो पेड़-पौधे दानवसरट का भोजन थे, वे भी इस बदलते मौसम मे नष्ट हो गये । भोजन की कमी और ठण्डे मौसम ने शाकाहारी दानवसरटों को नष्ट कर दिया । ये शाकाहारी दानवसरट मांसाहारी दानवसरटों का भोजन थे । इनके नष्ट होने से मांसाहारी दानवसरटों को भोजन मिलना बन्द हो गया और वे भी नष्ट हो गये । ये दानवसरट बदलते हुए वातावरण मे अपने को नही ढाल सके, इसीलिए इस धरती से ये सदा के लिए लुप्त हो गये ।

लेकिन, उस समय कुछ ऐसे छोटे सरीसृप भी थे जिन्होंने अपने को बदलती परिस्थिति मे ढाल लिया और वे आज तक किसी-न-किसी रूप मे जीवित हैं ।
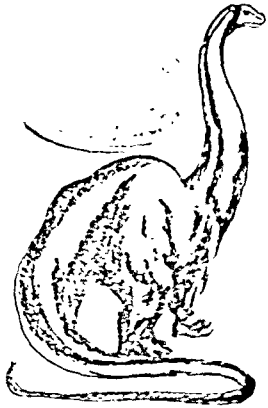
सरीसृपों की जो सन्तानें आज जीवित हैं, उनमें हम सांप, गिरगिट, मगर

सांप गिरगिट
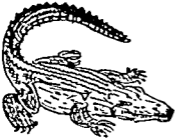
मगर कछुआ

और कछुए को देख सकते हैं।

○○

सांप
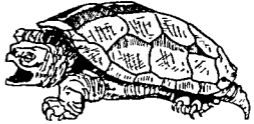
जब हम साप शब्द का उच्चारण करते है तो हमारे कानों मे मन को भयभीत कर देने वाली फुफकार गूंजने लगती है। हमारी आंखों के सामने एक मोटी रस्सी की तरह का काला या मटमैला जीव साकार हो उठता है, जो कुण्डली मारे, फन फैलाये बैठा है और अपनी जीभ लपलपा रहा है। उसकी कल्पना करके ही हम सिहर उठते हैं
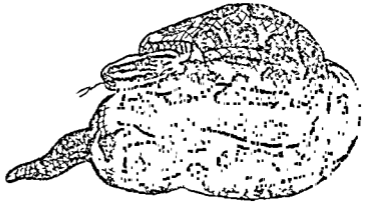
कुण्डली मारे सांप

क्योंकि हम जानते हैं कि साप एक जहरीला, कुरूप और भयंकर जीव है। यदि यह काट लेता है तो जीवन की रक्षा करना मुश्किल हो जाता है। लेकिन वास्तव में बात ऐसी नही है।

सापों की कुछ ही जातियां ऐसी हैं जो जहरीली होती है। यही नहीं, यदि हम सापों को देखे तो हमे पता चलेगा कि बहुत से सांप बड़े ही रंग-बिरंगे और आकर्षक होते है।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि विश्व में सांपों की कुल 2,450 जातियां हैं, लेकिन इनमें केवल 175 जातियों के सांप ही इतने जहरीले होते हैं, जो मनुष्यों का कुछ अहित कर सकते हैं।

जहरीले सांपों की पहचान

सांपों को देखकर ही जहरीले सांपों को पहचान लेना बड़ा कठिन है। कोई एक ऐसा तरीका नहीं है जिससे हम जहरीले सांपो की पहचान कर सकें।

कुछ लोगों का कथन है कि तिकोने सिर वाले सांप ही जहरीले होते हैं, लेकिन यह विश्वास भ्रामक है। विश्व के सबसे खतरनाक सांप मलय के किंग कोबरा, अफ्रीका के काले भाम्बा और अमेरिका के मूंगे के सांप होते हैं, लेकिन इन सबके सिर तिकोने नही, गोल होते हैं। इसके अलावा अनेक देशों में पानी के
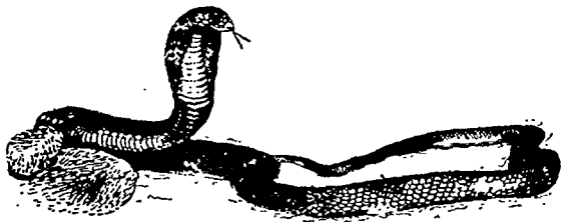
कोबरा सांप

ऐसे सांप पाए जाते हैं, जिनके सिर तिकोने होते हैं लेकिन फिर भी वे किसी को कोई क्षति नहीं पहुंचाते। इसलिए सिर या शक्ल को देखकर हम जहरीले सांपों की पहचान नहीं कर सकते।

कुछ दूसरे लोगों का मत है कि गोल आंखों वाले सांप खतरनाक नहीं होते। इसके विपरीत बिल्ली-जैसी लम्बी आंखों वाले सांप जहरीले होते हैं, लेकिन यह मत भी उचित नहीं दिखायी देता। भारत, मलय और अफ्रीका के कोबरा-नामक सांप बड़े जहरीले होते हैं, लेकिन उनकी आंखें गोल होती हैं। इसलिए केवल आंखों को देखकर भी हम जहरीले सांपों को नहीं पहचान सकते।

यह कहना भी ठीक नहीं है कि हरे रंग के सभी सांप जहरीले होते हैं। अफ्रीका का हरा माम्बा बड़ा घातक है, लेकिन उत्तरी-पूर्वी अमेरिका के हरे सांप किसी को कोई क्षति नहीं पहुंचाते। वास्तव में वे डंक मारना भी पसन्द नहीं करते।

हम जहरीले सांपों को तब तक नहीं पहचान सकते जब तक कि उनका मुंह खोलकर उनके जहरीले दांत और जहर की थैली या ग्रन्थि न देख लें।

जहर कहाँ होता है?

किसी भी विषैले सांप के विष-यन्त्र में उसके नली के समान खोखले दांत, मांस की नलियां और विष की थैली या ग्रन्थि शामिल होती है। मांस की नलियां

सांप के दांत
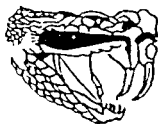
सांप का विष-यन्त्र

खोखले दांतों और विष की थैली को एक-दूसरे से जोड़ती हैं। विष की थैलियां सांप के सिर के दोनों किनारों पर होती हैं। विष की इन्हीं थैलियों में विष बनना

जाता है। इससे आंखों को बड़ी क्षति पहुँचती है।

सांप कैसे चलता है ?

सांप के पांव नहीं होते, लेकिन फिर भी वह तेजी से दौड़ सकता है। आपके मन में प्रश्न उठेगा, बिना हाथ-पांव वाला यह जीव इतनी गति से कैसे दौड़ता है ? इसे समझने के लिए पहले हमें उसकी भीतरी रचना को देखना होगा। सांप रीढ़ की हड्डी वाला जीव है। इसकी रीढ़ की हड्डी लगभग 300-400 छोटी-छोटी हड्डियों से मिलकर बनती है। इन छोटी-छोटी हड्डियों को 'कशेरुका' कहते हैं। पहले दो-तीन कशेरुकाओं में पसली की कोई हड्डी नहीं होती, लेकिन बाकी सभी कशेरुकाओं में दोनों ओर पसलियां जुड़ी होती हैं। इन पसलियों का एक सिरा कशेरुकाओं से जुड़ा होता है और दूसरा स्वतन्त्र रहता है। ये गोलाई में घूमी हुई

सांप की चाल

और लचकीली पसलियां बड़ी आसानी से आगे-पीछे घूम सकती हैं। सांप के चलने में उसके शरीर पर लगे छिलके भी काफी सहायता करते हैं। जब सांप चलता है तो उसकी एक तरफ की पसलियां आगे जाती हैं। इससे सांप का एक तरफ का हिस्सा कुछ आगे बढ़ जाता है। अब उसके शरीर के नीचे की ओर के छिलके धरती को पकड़ लेते हैं और इसके बाद दूसरी ओर की पसलियां आगे बढ़ती हैं। जब आगे बढ़ जाती हैं तो उस ओर के छिलके भी जमीन को पकड़ लेते हैं। इस सांप का पिछला भाग आगे खिंचता रहता है और अगला आगे [illegible] रहता है।

यहां एक बात उल्लेखनीय है । यदि सांप के शरीर पर छिलके न हों तो वह आसानी से नहीं चल सकता । यदि धरती चिकनी हो तो उस पर भी सांप आसानी से नही चल सकता । यदि सांप को किसी कांच की चादर पर रख दिया जाय तो उसे चलने में बड़ी कठिनाई अनुभव होगी । इसका कारण यही है कि सतह के चिकनी होने के कारण वह अपने शरीर के कांटे उसमें नही अटका सकता।

अफ्रीका के कुछ मण्डली (वाइपर) सर्प चिकने और हमेशा शक्ल बदलते हुए रेत पर रहते हैं । इसलिए वे साधारण भूमि पर रहने वाले सांपों की भांति नहीं चल सकते । जब वे चलते हैं तो अपने शरीर का एक भाग आगे की ओर फेंक देते हैं । इसके बाद ये अपना शेष शरीर उठाकर उस आगे फेंके हुए भाग के पास ले आते है और इसी तरह आगे बढ़ते रहते हैं ।

उड़ने वाला सांप
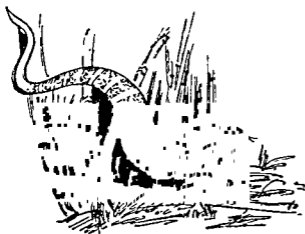
आपको जानकर आश्चर्य होगा कि मलय में रहने वाले कुछ सांप चलकर नहीं, उड़कर एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं । ये 15-16 इंच लम्बे, बड़े ही रंग-बिरंगे सांप होते हैं । इनका उड़ने का ढंग बड़ा विचित्र है । ये अक्सर पेड़ों पर ही रहते हैं । जब इन्हें किसी दूसरी जगह जाना होता है तो ये अपने शरीर को चपटा बना लेते हैं फिर हवा में छलांग लगाते हैं । इनका चपटा शरीर हवा में इनका सन्तुलन रखता हुआ दूर किसो दूसरे वृक्ष की डाल तक पहुंचा देता है ।

जब कोई खतरा पास होता है तो इन सांपों को छलांगें देखते ही बनती हैं । बीसों सांप एक डाल से दूसरी डाल पर कूदते दिखाई देते हैं और इस तरह

शत्रु से अपने प्राणों की रक्षा करते हैं।

सांप क्या खाते हैं ?

सांप मांसाहारी जीव है। चीटी के अण्डे हो या मेढक, कीट-पतग हो या मछली, सरट हो या पक्षी—सांप सभी को चट कर जाता है। बहुत से सर्प चूहों और बड़े-बड़े जानवरों का भी आहार करते है। कुछ सांप ऐसे भी हैं जो अपने से छोटे तथा विषधर सांपों को अपना भोजन बनाते है। इनके विष का इन सांपों पर कोई प्रभाव नही पडता। मलय के नागराज को ही लीजिए। यदि उसे साप मिलते रहें तो वह दूसरे जीवों को आंख उठाकर भी नही देखता। लेकिन वह विषधर सांपों का नही, निर्विष सांपों का ही भोजन करता है। इसके विपरीत अमेरिका का मुस्सुराना सांप विषधर सांपों को ही खाता है।

सांप तथा छोटे जन्तुओं का आहार करने वाले सांपों का भोजन शीघ्र पच जाता है और उन्हें छः-सात दिन के भीतर ही भोजन की आवश्यकता पड़ती है। बड़े जन्तुओं का आहार करने वाले सर्पों का एक बार खाया हुआ भोजन दस-बारह दिन के लिए काफी होता है।

शिकार पकडने का सांपों का ढंग बड़ा विचित्र है। निर्विष सांप शिकार देखते ही तेजी से उस पर झपटता है और अपने अंकुशनुमा दांत उसके शरीर पर गड़ा लेता है। इन दांतों के शिकंजे से निकल भागना शिकार के वश की बात नहीं। दूसरे ही क्षण सांप का शरीर रस्सी को तरह शिकार के शरीर पर लिपटकर उसे कसने लगता है। यह सब पलक झपकते हो हो जाता है कि शिकार को विरोध करने का अवसर ही नही मिलता। कुछ लोगों का विचार है कि सांप अपनी कुण्डली से शिकार के शरीर को इतना कसता है कि उसको हड्डियां टूट जाती हैं और वह मर जाता है। लेकिन यह मत भ्रामक है। वास्तव में सांप की कुण्डली का उद्देश्य है—शिकार की श्वास-नलियों को अवरुद्ध करके उसका गला घोंट देना

सांप का कुण्डली-बन्धन कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, वह किसी भी जीव की हड्डी नहीं तोड़ सकता । छोटे सांपों की तो बात ही क्या, अजगर तक की कुण्डली में यह शक्ति नहीं पाई जाती ।

इस प्रकार शिकार पकड़ने वाले बड़े सांपों में मलय के तीस फीट लम्बे अजगर तथा भारत के पन्द्रह फीट लम्बे अजगर प्रमुख हैं । इस तरीके से शिकार पकड़ने वाले छोटे सांपों में उत्तरी-पूर्वी अमेरिका के पहाड़ी सर्पों, कैलीफोर्निया के नागराजों तथा दूसरे सैकड़ों सांपों को रखा जा सकता है ।

कुछ छोटे सांप शिकार मारने के लिए दूसरा तरीका अपनाते हैं । इसके लिए उन्हें विशेष तरह के दांत मिले होते हैं । ये दांत हुकों की तरह भीतर की ओर मुड़े
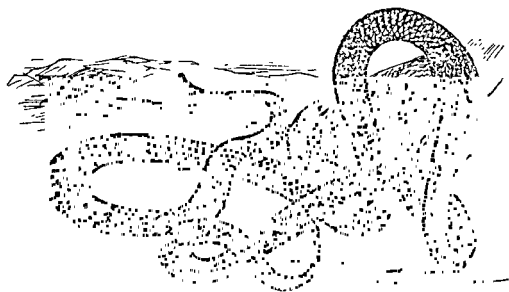
सांप को खाता सांप

र । जब किसी शिकार के शरीर पर ये दांत गड़ जाते हैं तो वह किसी भी

तरह इनके शिकंजे से नही छूट सकता। शिकार जितना बाहर निकलने की कोशिश करता है, उतना ही पेट के भीतर चला जाता है। इसके साथ ही दांतों से विष भी निकलता है, जिससे तुरन्त ही शिकार के प्राण-पखेरू उड़ जाते हैं।

कुछ सांपों के मुंह के पिछले भाग में बडे-बड़े दांत होते हैं। इन दांतों का विशेष प्रयोजन है। जब सांप किसी मेंढक को पकड़ता है तो वह अपना शरीर खूब फुला लेता है। मेंढक के इस फूले हुए शरीर को सांप आसानी से नही निगल सकता। जब ऐसा अवसर आता है तो साप अपने इन्ही बड़े दातों से उसका शरीर चीर देता है। इससे मेंढक के शरीर की हवा निकल जाती है और उसका शरीर छोटा हो जाता है।

25 फीट लम्बा अजगर बड़ी आसानी से एक छोटे सूअर को निगल सकता है। इसमे उसे एक घण्टे से अधिक समय नहीं लगता। भोजन निगलने के बाद वह किसी आराम की जगह चला जाता है और वहां दो सप्ताह तक आराम करता है। इतने समय में यह अपने भोजन को पूरी तरह हज़म कर लेता है।

सांप कैसे सुनता है ?

सांप एक बात में दूसरे सरीसृपों से भिन्न है। इनके न कान होते हैं, न पलक। इनकी आंखों पर एक पारदर्शक झिल्ली होती है। यही झिल्ली इनकी आंखों की रक्षा करती है। कान न होने के कारण सांप हमारी-आपकी तरह सुन नहीं सकता। वैज्ञानिकों का मत है कि किसी प्रकार के शब्दों का प्रकम्पन जमीन के सहारे सांप के निचले जबड़ों तक पहुँचता है और यहां से वह उसके मस्तिष्क तक जाता है। यदि सांप फन जमीन से ऊपर उठाये बैठा हो तो वह किसी प्रकार शब्द नहीं सुन सकता।

लपलपाती जीभ

हम सांपों को जीभ लपलपाता देखकर भयभीत हो उठते हैं। बहुतों का विश्वास है कि इसी जीभ के सहारे सांप विष की मार करता है। लेकिन सांप की जीभ का उसके विष से किसी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं है। यह लपलपाती जीभ तो वास्तव में कुछ वस्तुओं की टोह लेने के काम आती है। इसी जीभ की सहायता से सांप सूक्ष्म-से-सूक्ष्म चीजों का अनुभव कर लेता है।

जीभ निकाले सांप

यह जीभ आगे से दो भागों में चिरी रहती है। वायुमण्डल में कोई भी गंध हो, उसका अनुभव भी यह जीभ कर लेती है। जब सांप मार्ग में कोई खाने की चीज पाता है तो वह उसे अपनी जीभ से टटोलकर ही निश्चय करता है कि उसे खाया जाय या नहीं।

जब जीभ बाहर लपलपाती नहीं रहती तो वह मुंह के भीतर एक थैली में सिमटी पड़ी रहती है। यही कारण है कि जब हम सांप का मुंह खोलकर देखते हैं तो हमें उसकी जीभ कहीं दिखाई नहीं देती।

सांप की केंचुली

सांप का केंचुली उतारना प्रसिद्ध है। सांप के समूचे शरीर पर एक पतली
ती है। इसी को केंचुली कहते हैं। इसे सांप वर्ष में कई बार उतार फेंकता
ली उतारने से पूर्व सांप का रंग कुछ बदल जाता है। उसकी आंखें भी
जाती हैं। सप्ताह, दो सप्ताह तक ऐसी ही स्थिति रहती है। फिर
त्वचा के नीचे एक तैलीय पदार्थ आ जाता है और त्वचा का

सम्बन्ध शरीर से टूट जाता है। ऐसी दशा में सांप केंचुली उतारना आरम्भ करता है।

सांप पहले ऊपरी और निचले जबडों की केंचुली उतारता है। इसके लिये वह जबड़ों को किसी पत्थर आदि पर रगडता है। जब केंचुली फट जाती है तो वह इसके सिरे को किसी कडी चीज मे अटका देता है और फ़िर इसमें से बाहर निकल आता है। केंचुली से बाहर निकलने के बाद सांप बड़ा ही फुर्तीला और चमकीला दिखाई देता है। केंचुली उतारने का एक विशेष प्रयोजन है। यदि सांप केंचुली न उतारे तो उसके रक्त-सचालन में अवरोध-सा होने लगता है और उसके जीवन की सारी क्रियाएँ मन्द पड़ जाती हैं।

केंचुली बदलता सांप

सर्दी-गर्मी का प्रभाव

सांप दूसरे सरीसृपों की तरह ठण्डे रक्त वाला जीव है। वायुमण्डल के तापमान के साथ ही उसके शरीर का तापमान भी घटता-बढता रहता है। इसलिये सांप अधिक ठण्ड या अधिक गर्मी सहन नहीं कर सकता। अगर 90 अंश तक का तापमान हो तो सांप बड़ा चुस्त और सजग रहता है। इसके बाद ज्यों-ज्यों तापमान गिरता है त्यों त्यों-सांप सुस्त होने लगता है। 40 अंश के नीचे तो उसमें जीवन का कोई चिह्न मुश्किल से ही शेष रह जाता है। सर्दियों की अपेक्षा गर्मियां

लपलपाती जीभ

हम सांपों को जीभ लपलपाता देखकर भयभीत हो उठते हैं। बहुतों का विश्वास है कि इसी जीभ के सहारे सांप विष की मार करता है। लेकिन सांप की जीभ का उसके विष से किसी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं है। यह लपलपाती जीभ तो वास्तव में कुछ वस्तुओं की टोह लेने के काम आती है। इसी जीभ की सहायता से सांप सूक्ष्म-से-सूक्ष्म चीजों का अनुभव कर लेता है।

जीभ निकाले सांप

यह जीभ आगे से दो भागों में चिरी रहती है। वायुमण्डल में कोई भी गंध हो, उसका अनुभव भी यह जीभ कर लेती है। जब सांप मार्ग में कोई खाने की चीज पाता है तो वह उसे अपनी जीभ से टटोलकर ही निश्चय करता है कि उसे खाया जाय या नहीं।

जब जीभ बाहर लपलपाती नहीं रहती तो वह मुंह के भीतर एक थैली में सिमटी पड़ी रहती है। यही कारण है कि जब हम सांप का मुंह खोलकर देखते हैं तो हमें उसकी जीभ कहीं दिखाई नहीं देती।

सांप की केंचुली

सांप का केंचुली उतारना प्रसिद्ध है। सांप के समूचे शरीर पर एक पतली त्वचा होती है। इसी को केंचुली कहते हैं। इसे सांप वर्ष में कई बार उतार फेंकता है। केंचुली उतारने से पूर्व सांप का रंग कुछ बदल जाता है। उसकी आंखें भी सफेद हो जाती हैं। सप्ताह, दो सप्ताह तक ऐसी ही स्थिति रहती है। फिर ऊपर की त्वचा के नीचे एक तैलीय पदार्थ आ जाता है और त्वचा का

सम्बन्ध शरीर से टूट जाता है। ऐसी दशा में सांप केंचुली उतारना आरम्भ करता है।

सांप पहले ऊपरी और निचले जबड़ों की केंचुली उतारता है। इसके लिये वह जबड़ों को किसी पत्थर आदि पर रगड़ता है। जब केंचुली फट जाती है तो वह इसके सिरे को किसी कड़ी चीज में अटका देता है और फिर इसमें से बाहर निकल आता है। केंचुली से बाहर निकलने के बाद सांप बड़ा ही फुर्तीला और चमकीला दिखाई देता है। केंचुली उतारने का एक विशेष प्रयोजन है। यदि
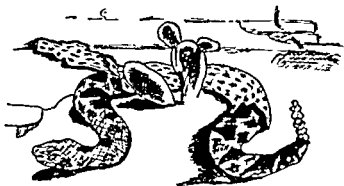
केंचुली बदलता सांप

सांप केंचुली न उतारे तो उसके रक्त-संचालन में अवरोध-सा होने लगता है और उसके जीवन की सारी क्रियाएँ मन्द पड़ जाती हैं।

सर्दी-गर्मी का प्रभाव

सांप दूसरे सरीसृपों की तरह ठण्डे रक्त वाला जीव है। वायुमण्डल के तापमान के साथ ही उसके शरीर का तापमान भी घटता-बढ़ता रहता है। इसलिये सांप अधिक ठण्ड या अधिक गर्मी सहन नहीं कर सकता। अगर 90 अंश तक का तापमान हो तो सांप बड़ा चुस्त और सजग रहता है। इसके बाद ज्यों-ज्यों तापमान गिरता है त्यों त्यों-साप सुस्त होने लगता है। 40 अंश के नीचे तो उसमें जीवन का कोई चिह्न मुश्किल से ही शेष रह जाता है। सर्दियों की अपेक्षा गर्मियां

सांप को अधिक पसन्द हैं, लेकिन 90 अंश से ऊपर की गर्मी भी उसे सहन नहीं होती।

सर्दियों में सांप पूरी तरह आराम करते हैं। ये खाना-पीना छोड़कर जमीन के नीचे चले जाते है और चार-छ महीने वहीं रहते हैं। यहाँ ये 'गहरी निद्रा' में जीवन बिताते हैं, जिसे शीतस्वाप या 'हाईबरनेशन' कहा जाता है। इस काल में सांप उस चर्बी पर जीवित रहता है, जिसका उसने गर्मी के दिनों में संचय कर

कुछ लोगों का मत है कि सांप की आयु लगभग सवा सौ वर्ष होती है, लेकिन वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि सांप तीस साल से अधिक जीवित नहीं रहता। अजगर भी लगभग तीस वर्ष ही जीवित रहता है।

सबसे विशाल : सबसे छोटे

आप पूछेंगे, सांपों की अधिकतम लम्बाई कितनी होती है ? कहते हैं कि मलय देश के अजगर सबसे लम्बे होते हैं। इनमें से एक जाति के अजगरों की अधिकतम लम्बाई 33 फीट होती है और दूसरी जाति के अजगरों की 30 फीट। उसके सिर का रंग भूरा होता है। इसके थूथन से गर्दन तक एक पतली काली रेखा बनी होती है। इस जाति (पाइथन रैटिकुलेटस) के सांप बर्मा और थाई देश में भी पाये जाते हैं।

भारतीय अजगरों (पाइथन मोल्फरस) को भी हम विशालतम अजगरों की श्रेणी में रख सकते हैं। यह 25 फीट तक लम्बा और 4 मन तक भारी होता है। शिकार को यह कुण्डली लगाकर मारता है और फिर सिर की ओर से उसे समूचा ही निगल जाता है। एक बार शिकार निगल लेने के बाद यह कई मास तक निराहार

रह सकता है। यह भेड, बछड़े और खरगोश ही नहीं, छोटे हिरनों तक को निगल जाता है। एक बार जो शिकार इसके मुंह मे फंस जाता है वह किसी भी तरह नही छूटता।

अजगर

भारतीय अजगर दो रंगों का होता है। एक का रंग मटमैला होता है और दूसरे का जैतूनी। दोनों के शरीर पर गहरे धब्बे पड़े रहते हैं। अफ्रीका में भी अजगर (पाइथन सीबी) पाये जाते है, लेकिन इनकी लम्बाई 20 फोट से अधिक नही होती। दक्षिणी अमेरिका के सांप एनेकोंडा की लम्बाई भी 25 फीट तक पाई जाती है लेकिन यह भारतीय अजगर से बहुत अधिक भारी होता है। इसके शरीर की गोलाई तीन-चार फीट होती है। यह जल में भी पाया जाता है और थल पर भी। जल मे यह थोड़ा-सा सिर बाहर निकाले पड़ा रहता है। ज्यों ही कोई जन्तु पानी पीने जल के समीप आता है, यह उस पर टूट पड़ता है और उसे निगल जाता है।

यह तो हुई विशाल सर्पो की बात। सबसे छोटा सांप पूरी तरह बड़ा हो जाने पर भी चार इंच लम्बा ही रहता है। इसे तेलिया सांप कहते हैं। जब यह पैदा होता है तो आध-पौन इंच से अधिक बड़ा नही होता। ये सांप पत्थरों के

नीचे पेड़ों की जड़ों तथा बागों के अकेले कोनों में पाये जाते हैं।

कुछ भारतीय सांप

वैसे तो भारत में लगभग पौने चार सौ जातियों के सांप पाये जाते हैं लेकिन नाग (कोबरा) और करैत यहाँ के भयंकर विषधर सांप हैं। यहाँ के मण्डली या दबोइया और नागराज नामक जाति के सांप भी बड़े भयंकर होते हैं।

नाग (कोबरा) की लम्बाई लगभग साढ़े चार-पांच फीट होती है। यह कई रंगों का होता है। कई बार तो एक ही स्थान पर रहने वाले नागों में विभिन्न रंग पाये जाते हैं। आयु के साथ भी इनके रंगों में परिवर्तन होता रहता है। अधिकांश नाग काले रंग के होते हैं। नाग सिर उठाकर और फन फैलाकर बैठता है। नागों के माथे पर एक अण्डाकार धब्बा होता है, जो तिलक की तरह दिखाई देता है, लेकिन बहुत से नागों में आयु या दूसरे कारणों से यह धब्बा धुंधला पड़ जाता है।

नागराज

नागों के एक विषदन्त मुंह के पिछले भाग में होता है। इसके पीछे एक, दो या तीन छोटे साधारण दांत और होते हैं। इसकी आंखें गोल होती हैं, जिससे इसकी शक्ल बड़ी डरावनी बन जाती है। नागों के दांत बड़े विषैले होते हैं। नागों के शरीर पर इनकी 25 पंक्तियां तक पाई जाती हैं।

उत्तर भारत में नाग काफी पाया जाता है, मध्य भारत में भी यह मिलता

है, लेकिन दक्षिण भारत में नागों की संख्या बहुत कम है।

नाग अक्सर मई में अण्डा देते हैं। एक बार में नागिन 10 से लेकर 20 अण्डे तक दे सकती है। ये अण्डे ढाई-पौने तीन मास के भीतर फूटते हैं। जन्म के समय शिशु नागों की लम्बाई 9-10 इंच होती है।

नागराज

नागों की दो जातियां भारत में पाई जाती हैं। एक को साधारण नाग (कोबरा) कहते हैं, दूसरे को नागराज। नागराज भी फन उठाकर बैठता है। यह दक्षिण भारत से हिमालय तक पाया जाता है। इसकी लम्बाई 15 फीट से अधिक नहीं होती।

नागराज घास-पात इकट्ठा करके घोंसला बनाता है और उसी में अपने अण्डे देता है। एक बार में मादा नागराज 20 से 50 तक अण्डे दे सकती है। अण्डे देने के बाद यह उन पर कुण्डली मारकर बैठ जाती है और उनमें से बच्चे निकलने तक उनकी रखवाली करती रहती है। जब बच्चे पैदा होते हैं तो उनकी लम्बाई लगभग 20 इंच होती है।

नागराज अपने से छोटे विषधर और निर्विष सांपों पर आहार करता है। यह अपनी जाति के सांपों को खा जाता है। कभी-कभी तो इसे अजगर पर भी हमला करते देखा गया है। यह वृक्षों पर भी आसानी से चढ़ जाता है। इसके विषदन्त के पीछे तीन छोटे और साधारण दांत होते हैं।

करैत

करैत सांप आमतौर पर मैदानों, खेतों और बस्तियों मे पाये जाते हैं, ऊंचे स्थानों पर यह नहीं मिलते। व्यर्थ में ही किसी को काट लेना इनकी आदत

नही। जब इन्हें छेड़ा जाता है या तंग किया जाता है, तभी ये काटने को
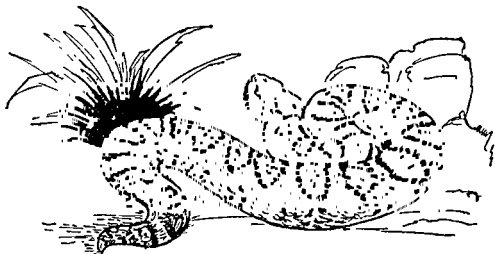
करैत

बाध्य होते हैं। यदि इन्हें पकड लिया जाय तो ये तुरन्त ही कुण्डली बनाकर उसके भीतर अपना मुंह छिपा लेते हैं। यदि आप इन्हें छेड़ें तो ये क्षणभर को मुंह ऊपर उठायेंगे, लेकिन आपको देखते ही फिर कुण्डली में मुंह छिपा लेंगे।

करैत का भोजन भी सांप ही है, चाहे वह निर्विष हो या विषधर। सांप के अतिरिक्त यह मछली, मेंढक, स्तनपोषी जीवों तथा छिपकलियों को भी चट कर जाता है।

विभिन्न जातियों के करैत विभिन्न रंगों के होते हैं। करैत काला भी होता है, नीला-काला भी और रंग-बिरंगा भी। इसकी अधिकतम लम्बाई छः-साढ़े छः फीट तक पाई गई है। इसके विष में वह शक्ति नहीं होती जो नाग (कोबरा) के विष में होती है। इसका विष नाग के विष से सात-आठ गुना कम असर करता है। कुछ लोगों तो यहां तक कहना है कि इसके काटने से मनुष्य की मृत्यु नहीं हो सकती।

करैत के विषदन्त के पीछे दो, तीन या चार छोटे दांत होते हैं। इसकी आंखें छोटी और गोल होती हैं। इसकी आंखों में एक विशेषता होती है। इनका अक्ष-पटल रंगीन नही होता, इसलिए इनकी पुतली दिखाई नहीं देती। यह सांप लगभग सारे भारत में पाया जाता है।

दबोइया

दबोइया भी भारत का प्रमुख सांप है। यह सारे भारत मे पाया जाता है। गुजरात और राजस्थान में यह विशेष रूप से मिलता है। इसके विषदन्त बहुत बड़े होते है। इतने बड़े कि इसे उन्हे मोड़कर रखना पड़ता है। कोबरा के बाद यही भारत का सबसे अधिक घातक सांप है। यद्यपि इसका विष कुछ देर से असर करता है, लेकिन यह निश्चित रूप से घातक होता है।

दबोइया रात मे ही बाहर निकलता है, लेकिन धूप इसे पसन्द है। इसे अक्सर धूप सेंकते पाया जाता है। इसकी फुफकार बड़ी भयंकर होती है।

दबोइया

भारी शोर करता हुआ यह शत्रु पर प्रहार करता है। इसका प्रहार भी बड़ा शक्तिशाली है। इसके लम्बे और मुड़ने वाले दांत शत्रु के शरीर पर गहरे घाव कर देते हैं और इन्हीं गहरे घावों से इसका विष शत्रु के शरीर में प्रवेश करता है।

दबोइया तीन-चार फीट लम्बा होता है। इसका रंग भूरा होता है। इसके शरीर पर तीन काली पट्टियां पड़ी रहती हैं। इन पट्टियों के सफेद किनारे भी होते हैं। इसके सिर पर दो पीली रेखाएं भी होती हैं जो इसके थूथन पर जाकर मिल

जाती हैं।
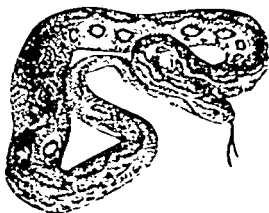
दबोइया चूहे भी खाता है, मेंढक भी। यह पेड़ों पर तो चढ़ ही जाता है पानी में भी घुस जाता है। जब यह फुफकारता है तो इसके शत्रु को सामने ही काल दिखाई देने लगता है।

समुद्री सांप

नाग या करैत की भांति ही कुछ विषैले समुद्री सांप भी होते हैं जो पानी में रहकर ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इनकी पूंछ चपटी होकर डांडनुमा बन
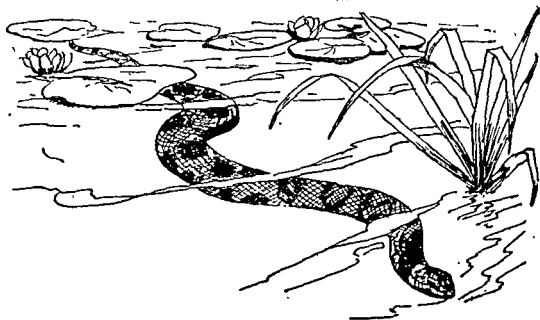
समुद्री सांप

सके इन्हें तैरने में आसानी हो। ये सांप लगभग पचास जातियों के होते लम्बाई-तीन फीट से बारह फीट तक होती है। प्रशान्त तथा हिन्द में ये सांप बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। ये सांप मछलियों तथा सागर के

दूसरे छोटे जीवों पर प्रहार करते है ।

इनकी नाक सिर के छोर पर होती है । इनमें कपाट की भी व्यवस्था रहती है ताकि पानी भीतर न जा सके ।

सांप सम्बन्धी मान्यताएं

सांपों के सम्बन्ध में अनेक मान्यताएँ प्रचलित हैं । कुछ लोगों का कथन है कि बहुत से सांप अपनी पूंछ को मुंह मे दबा लेते हैं और गोल घेरे की शक्ल मे घूमते हुए पहाड़ों से नीचे उतर जाते हैं । कुछ दूसरे लोगों का कहना है कि यदि सांप का सिर काट दिया जाय तो वह सूरज छिपने तक जीवित रहता है । कुछ लोगो के मत मे बहुत से सांप गाय का दूध दुहकर पी जाते हैं, लेकिन ये सभी मान्यताएँ भ्रामक हैं। न तो कोई सांप घेरा बनाकर पहाड़ी से नीचे उतर सकता है और न ही गाय का दूध दुह सकता है । सिर कटने पर वह संध्या होने तक जीवित भी नही रह सकता ।
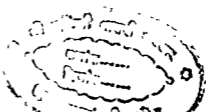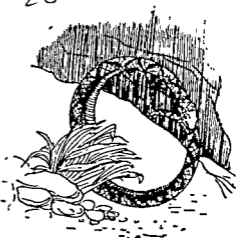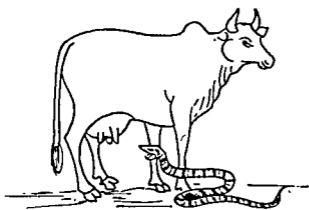
कछुआ

कछुआ भी सरीसृप-वंश का एक निराला जीव है। संसार के विभिन्न भाग
में इसकी सैकड़ों जातियाँ रहती हैं। इन्हें हम दो भागों में बाँट सकते हैं। पहल
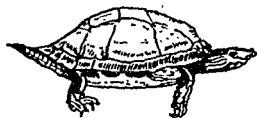
स्थल-कच्छप
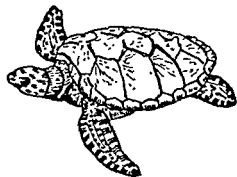
जल-कच्छप

श्रेणी में ऐसे कछुए आते हैं जो थल पर रहकर ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं
इन्हें स्थल-कच्छप या स्थल पर रहने वाले कछुए कहा जाता है। दूसरी श्रेणी के
कछुए जल में रहते हैं और जल-कच्छप कहलाते हैं। जल में रहने वाले कछुए भी दो
प्रकार के हैं। पहले वे, जो मीठे पानी या दलदल में रहते हैं और दूसरे वे जो समुद्र
के खारी पानी में अपना जीवन बिताते हैं।

इन तीनों प्रकार के कछुओं की शक्ल-सूरत और स्वभाव में विशेष अन्तर
नहीं अंगों में थोड़े हेर-फेर के साथ वे प्रायः एक ही तरह के होते हैं। विभिन्न

अंगों में एक बड़ा अन्तर उनके पांवों का है। स्थल पर रहने वाले कछुओं के पांव बड़े मजबूत और जमीन पर चलने योग्य होते हैं, जबकि प्रकृति ने जल में रहने वाले कछुओं के पांव तैरने की सुविधा देने के लिए पतवारनुमा बना दिए हैं। उनकी अंगुलियां बत्तख की अंगुलियों की तरह खाल से जुड़ी रहती है ताकि वे पानी के भीतर अपना सन्तुलन कायम रख सकें और आसानी से तैरकर एक स्थान से दूसरे स्थान को जा सकें। स्थल-कच्छप अपने अगले पांवों से जमीन भी खोद सकता है और खड़ी चट्टानों पर भी चढ़ सकता है। इसके पंजों में पांच अंगुलियां होती हैं।

पानी में रहने वाले कछुओं की एक और विशेषता है। उनका थूथन आगे की ओर निकला रहता है। इसी थूथन के सिरे पर इनकी नाक में छेद होते हैं। इन्हीं छिद्रों के सहारे यह पानी से अपना मुंह बाहर निकालकर सांस ले सकता है।

कुएं, तालाब तथा कीचड़ आदि में रहने वाले कछुओं का आकार समुद्र के खारी पानी में रहने वाले कछुओं के आकार से छोटा होता है। समुद्र में रहने वाले कई कछुए तो कई सौ मन तक भारी देखे गए हैं। समुद्र में रहने वाले ये कछुए सरीसृपों की बड़ी प्राचीन जातियों के वंशज हैं और पिछले 15 करोड़ वर्षों में सदा ही उनका यही रूप-रंग रहा है। अपने पतवारनुमा डैनों की सहायता से जब वे पानी में तैरते हैं तो लगता है मानो वे पानी में उड़े जा रहे हों।

कछुए की ढाल

कछुए की ढाल जगत-प्रसिद्ध है। प्राचीन काल में जब तलवारों से युद्ध होते थे तो योद्धा ढाल की सहायता से अपनी रक्षा किया करते थे। लेकिन कछुआ वर्तमान काल में भी अपनी कठोर और मजबूत ढाल के सहारे शत्रुओं से अपनी रक्षा करता है। ऐसा दृढ़ कवच अन्य किसी भी जन्तु में नहीं पाया जाता। यह इतना दृढ़ होता है कि इस पर चाहे लाठी मारें या तलवार, इसका इस पर कुछ भी असर नहीं होता। यह कवच कछुए के कोमल शरीर को चारों ओर से ढके रहता है।

इस कवच का नीचे का भाग सपाट होता है और ऊपर का गोलाकार। यह सब मिलकर एक डिब्बा-सा बन जाता है जिसके भीतर कछुआ पूरी तरह सुरक्षित

कछुए की ढाल
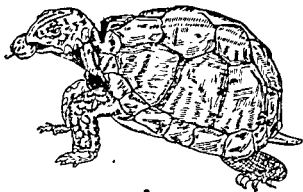
रहता है। इसके आगे और पीछे का कुछ भाग खुला रहता है। इस खुले भाग से यह अपनी लम्बी, लचीली गरदन, छोटी पूंछ और चारों टांगें बाहर निकाल सकता है और आवश्यकता होने पर या शत्रु के पास आने पर उन्हें तेजी से भीतर ले जा सकता है। जब कछुआ जमीन पर बैठता है तो उसकी मेहराबदार पीठ भारी बोझ उठा सकती है।

कुछ जलजीवी कछुओं के कवच मे एक और खूबी होती है। उनके ऊपरी तथा नीचे वाले कवच का सामने और पीछे वाला भाग कब्जे लगे किवाड़ों की तरह मुड़ सकता है। जब शत्रु पास आता है तो कछुआ इन किवाड़ों की सहायता से कवच के उन हिस्सों को भी बन्द कर लेता है, जिनसे वह गरदन, पूंछ और टांगें बाहर निकालता है। इन हिस्सों को बन्द कर लेने के बाद कछुए को किसी शत्रु की चिन्ता नहीं रहती। वह पूर्णतया सुरक्षित हो जाता है।

कछुए का यह कवच उसकी छाती और पीठ की हड्डियों का बना होता है। ये एक दूसरे से उसी तरह जुड़ी रहती हैं जिस तरह हमारे सिर की हड्डियाँ जकड़ी होती हैं।

चाल

कछुए की चाल बहुत धीमी होती है। उसे देखने पर लगता है मानो वह ... चल रहा है। उसके भारी-भरकम शरीर के लिए उसकी टांगें बहुत

छोटी हैं, शायद यही उसकी धीमी चाल का कारण हो। लेकिन सभी कछुए धीमी चाल से चलते हैं, यह मानना भी ठीक नहीं। पानी में रहने वाले कछुए शिकार मारने या शत्रुओं से बचने के लिए काफी तेज दौड सकते हैं। पूर्वी अमेरिका और मिसीसिपी नदी में रहने वाले कुछ कछुए तो आप पर झपट्टा भी मार सकते हैं।

उत्तरी ब्राजील और गियाना का 'माता-माता' नामक कछुआ भोजन की तलाश में इतना तेज चलता है कि आप दौड़कर भी इसे नहीं पकड़ सकते। इसकी शक्ल बड़ी विचित्र होती है। इसके सिर के चारों ओर खाल की एक झालर-सी लटकी रहती है। यही नहीं, इसके कवच पर पानी के पौधे भी उग आते हैं, जिनकी सहायता से यह बड़ी आसानी से पहचाना जा सकता है।

गरदन, आँख, कान

कछुओं की गरदन लम्बी और लचकीली होती है। किसी-किसी जाति में तो उसकी लम्बाई बहुत बढ़ जाती है। कछुए अपनी गरदन को सिकोड़कर कवच के भीतर छिपाए रहते हैं।

इनकी आंखें बहुत छोटी और तीन पलकों वाली होती हैं। जैसी हमारी-आपकी दो पलकें हैं, वैसी दो पलकें तो कछुए के होती ही हैं, इसके अलावा उसके एक तीसरी पलक भी होती है। यह पलक इसकी आंख के भीतर एक कोने में रहती है जिसे आवश्यकता पड़ने पर खोला और बन्द किया जा सकता है।

कछुए के कान के छेद जबड़ों के ऊपर दोनों ओर होते हैं। दूसरे जानवरों की तरह इनके मुंह मे दांत भी नहीं होते, लेकिन इनके जबड़े बड़े पैने और तेज होते हैं। इन्हीं की सहायता से ये मांस तक काटकर खा जाते हैं।

कुछ कछुए मांसाहारी होते हैं, कुछ शाकाहारी। मीठे पानी में रहने वाले कछुए अधिकतर मांसाहारी होते हैं। ये मछलियां और मेढक आदि तो खा ही जाते हैं, घोंघे, शंकु आदि को भी नहीं छोड़ते। कुछ कछुए तो बत्तख और बगुले

को भी चट कर जाते हैं।

खारे पानी में रहने वाले कछुए अधिकतर शाकाहारी होते हैं। समुद्र में पैदा होने वाली काई और शाकपात ही इनका भोजन है। लेकिन खारे पानी के कुछ कछुए भयंकर मांसाहारी होते हैं और सागर के छोटे जीवों को पकड़कर खा जाते हैं।

स्थल पर रहने वाले प्राय: सभी कछुए शाकाहारी हैं और घासपात का आहार करके ही अपना पेट भरते हैं। जब मांसाहारी कछुए अपना शिकार पकड़ते हैं तो देखते ही बनता है। उत्तरी ब्राजील का माता-माता कछुआ जब पानी में तैरता हुआ किसी छोटी मछली को देखता है तो एक क्षण के लिये अपना तैरना बन्द कर देता है। इसके बाद वह बड़ी ही धीमी गति से मछली की ओर बढ़ता है, इतनी धीमी गति से कि मछली को उसकी आहट भी नहीं मिलती। जब मछली इससे आठ-दस इंच दूर रह जाती है तो यह फिर तैरना बन्द कर देता है और एक क्षण को अपनी जगह रुक जाता है, लेकिन दूसरे ही क्षण इसका सिर बाहर निकलता है। फिर अकस्मात बन्दूक की गोली की तरह झपटकर यह मछली को अपने जबड़ों में बन्द कर लेता है। यह सब पलक मारते इतनी जल्दी हो जाता है कि मछली जान भी नहीं पाती कि कब कछुए ने उसे पकड़ा और कब वह उसके पेट में चली गई। इस कछुए की गरदन बहुत लम्बी होती है और इसकी ढाल के नीचे सिमटी-सिकुड़ी सी पड़ी रहती है।

स्वभाव

। बड़ा सीधा जीव है। वह डरपोक भी बहुत होता है। जरा-सी ...ट पानी में कूदा और झट आंखों से ओझल हो गया। यदि गूंगे ...ओं से घिर जाता है तो तुरन्त ही अपनी गरदन, पूंछ और टांगें ...च के भीतर छिपा लेता है और लोहे के बक्स की तरह जहां का

वहीं पड़ा रहता है। फिर चाहे आप इसे कितना ही मारें-पीटें, इस पर कुछ भी असर नहीं होता।

जब खतरा टल जाता है तो यह धीरे-धीरे अपना सिर, टांगें और पूंछ बाहर निकालता है और किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाता है।

कछुए के अंडे

कछुआ अण्डा देने वाला जीव है। यह नदी, तालाब या समुद्र के किनारे रेते को खोदकर अपना घोंसला बनाता है, फिर उसी में अपने अण्डे दे देता है। अण्डे देने के बाद यह उन्हें फिर रेत से ढक देता है। इसके बाद अण्डों से इसका कोई वास्ता नही रहता। चिड़ियो की तरह यह उन्हें 'सेना' पसन्द नही करता। जब रेत पर धूप पड़ती है तो वह गरम हो जाता है। इस गरमी से अण्डे स्वयं ही फूट जाते हैं और उनमे से बच्चे निकलकर धीरे-धीरे रेंगते हुए पानी मे चले जाते है।

अण्डे देता हुआ कछुआ

पानी मे जाते समय बहुत से बच्चों को पक्षी चट कर जाते हैं। इनसे बचकर जो बच्चे पानी मे चले जाते हैं, वही जीवित रहते हैं।
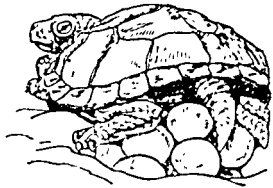
जो कछुए जीवनभर पानी में ही रहते हैं और कभी बाहर नहीं निकलते, उनकी मादाएं भी अण्डे देने के लिये पानी से बाहर आती हैं। गर्मियों के शुरू में किसी भी संध्या को हम मादा कछुओं को नदी के किनारे रेत में बैठा देख सकते हैं। ये इतने ऊंचे स्थानों पर अण्डे देती हैं जहां ज्वार में उनके बहने का डर न हो।

दो या तीन घण्टे के भीतर एक कछुवी 100 से लेकर 150 तक अण्डे दे देती है।

कछुए के अण्डे बड़े स्वादिष्ट होते हैं, इसीलिये मछुए इनकी खोज में सद ही नदियों, तालाबों और समुद्रों के किनारे घूमा करते हैं। अमेरिका को अमेज नदी के किनारे कुछ ऐसे कछुए भी पाये जाते हैं जिनके अण्डों से तेल निकलता है उसी तेल के कारण किसी समय इनका संग्रह किया जाता था।

प्रमुख कछुए

कछुओं की जीवित जातियों में सबसे लम्बे कछुए को चिमड़ा कछुआ (Leathery Turtle) कहते हैं। इसकी लम्बाई 6 फीट और वजन लगभग 28 मन होता है। यह कछुआ समुद्रजीवी है। इसके अगले पांव बहुत बड़े मछली के डैनों-जैसे और पिछले पांव पतवारनुमा होते हैं। यह तेजी से दौड़कर समुद्र के छोटे जीवों को पकड़ लेता है और उन्हें चट कर जाता है। यह दो बार में 300-350 अण्डे देता है।
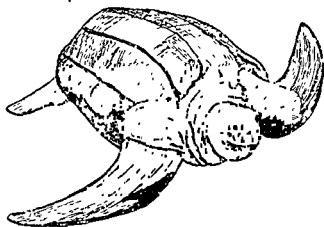
चिमड़ा कछुआ

हरित कछुआ (Green Turtle) भी समुद्रजीवी है। यह शाकाहारी है और अण्डे देने के लिये ही समुद्र से बाहर निकलता है। यह एक बार में 200 तक अण्डे देता है। इसकी चर्बी हरी होती है, शायद इसीलिये इसका यह नाम पड़ा है। इसकी लम्बाई 4 फीट से ज्यादा नहीं होती।

गोफर कछुआ (Gopher Tortoise) भी बड़ा अनोखा जीव है। इसका
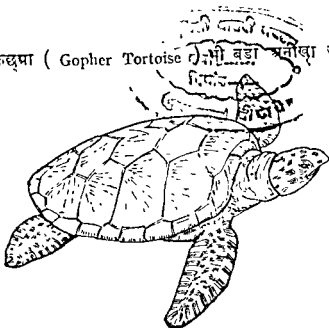
हरित कछुआ

रहने का स्थान बड़ा विचित्र होता है। अधिकांश स्थलजीवी कछुए झाड़ियों तथा घास-फूस के भीतर अपना रहने का स्थान बनाते हैं, लेकिन गोफर कछुआ लगभग 4 फीट लम्बा बिल बनाकर रहता है। इस बिल के अन्तिम कोने पर यह अपना रहने का स्थान बनाता है और उसी में बड़े आराम से रहता है। इसे पकड़ने के लिये इसके बिल के सामने एक गढा खोद दिया जाता है। जब यह बिल से बाहर निकलता है तो इसी गढ़े में गिर पड़ता है और पकड़ लिया जाता है। इसके पांव बड़े मजबूत होते हैं। इनके सहारे यह धरती पर आराम से चल लेता है।
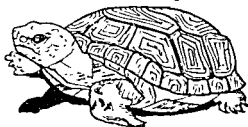
गोफर कछुआ

हमारे देश मे शिवालक की पहाड़ियों पर एक कछुआ पाया गया था। कहते हैं कि इसकी लम्वाई लगभग 8 फीट थी। इतना लम्बा कछुआ अब तक

दूसरा नहीं पाया गया है।

कुछ कछुए बड़े सुन्दर होते हैं। चित्तीदार कछुए को ही लीजिये। इसके काले शरीर पर नारंगी-पीली चित्तियाँ बड़ी सुन्दर दिखाई देती हैं। इसका आकार भी 3-4 इंच लम्बा होता है। यह पूर्वी अमेरिका में पाया जाता है। यह बहुत शीघ्र ही पालतू बन जाता है और मालिक के हाथ से खाना भी खा लेता है।

चित्तीदार कछुआ
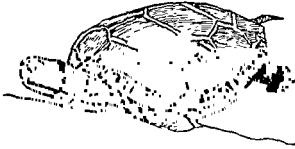
चित्रित कछुआ भी बड़ा सुन्दर होता है। यह अक्सर तालाबों में पाया जाता है। तालाब के बीच किसी चट्टान पर हम इसे धूप सेकते अक्सर देख सकते हैं। जब इसे तंग किया जाता है तो यह तुरन्त ही पानी के अन्दर कूद जाता है और तलहटी की दलदल के नीचे अपने को छिपा लेता है। इसकी ऊपरी तथा नीचे की ढाल पर पीले, नारंगी, लाल रंग का बड़ा सुन्दर किनारा बना रहता है। यही नहीं, इसके सिर पर पीली, लाल और काली धारियां भी पड़ी रहती हैं।

चित्रित कछुआ

उनके कारण यह बहुत सुन्दर दिखाई देता है। इसको भी बड़ी आसानी से पाला जा सकता है।
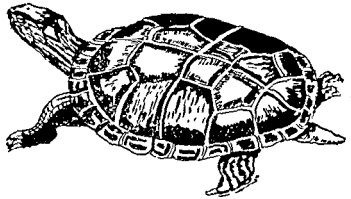
कछुओं की एक जाति ऐसी भी होती है जिनके शरीर का कवच अधिक

मजबूत और कड़ा नही होता। ये कछुए लगभग 15 इंच लम्बे होते हैं। इनका मिजाज बड़ा चिड़चिड़ा होता है। ये छिछले पानी के भीतर कीचड़ में अपना शरीर छिपाए पड़े रहते हैं। कभी-कभी ये अपना मुंह और थुथनी-जैसी लम्बी नाक पानी की सतह से ऊपर निकालते हैं और सांस लेकर फिर गरदन अन्दर कर लेते हैं। इन कछुओं को अपनी रक्षा के लिए ही ऐसे साधन अपनाने पड़ते हैं। इनका कवच कठोर नही होता, इसलिए यदि किसी शत्रु की दृष्टि इन पर पड़ जाय तो ये तुरन्त ही उसका शिकार बन सकते हैं। जब ये पानी से बाहर निकलते हैं तो बड़ी तेजी से चलते हैं, लेकिन फिर भी ये किनारे से कभी दूर नही जाते।
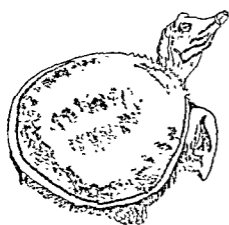
कोमल कछुआ

सरट

गिरगिट, छिपकली और गोह आदि जन्तुओं को मिलाकर सरटों की उपश्रेणी बनी है। सरटों की लगभग 1700 जातियाँ आज संसार में पाई जाती हैं। आधुनिक
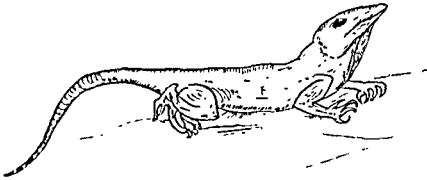
गिरगिट

युग के सरट प्राचीन काल के दानवसरटों से रूप-रंग में बहुत मिलते हैं, अन्तर केवल इतना है कि इनका आकार दानवसरटों से बहुत छोटा है। अब से करोड़ों वर्ष पहले जब दानवसरट पृथ्वी पर मुक्त हुए विचरा करते थे, बहुत से छोटे सरीसृप चट्टानों की दरारों और गड्ढ़ों में दुबके पड़े रहते थे। यही छोटे सरीसृप हमारे आधुनिक सरटों के पूर्वज थे। ये सुरक्षित स्थानो पर छिपकर दानवसरटों से अपनी रक्षा करते थे और अवसर मिलते ही दानवसरटों के घोंसलों पर हमला करके इनके अण्डों को खा .. थे। इनका शरीर बहुत छोटा था, इसलिए ये अपने को कहीं भी आसानी से सकत थे। इसके अतिरिक्त इन्हें अधिक भोजन की भी आवश्यकता नहीं थी।

जो कुछ थोड़ा-बहुत मिल जाता था, ये उसी से अपना पेट भर लेते थे, शायद

छिपकली गोह

इसीलिए ये अब तक सुरक्षित रह सके और इनके साथी दानवसरट करोड़ों वर्ष पूर्व ही समाप्त हो गए।

सारे संसार में

बाहर से देखने पर सरट हमें एक छोटे घड़ियाल की तरह ही दिखाई देता है। ध्रुवों और उनके समीपवर्ती क्षेत्रों को छोड़कर संसार का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं, जहां सरट न पाए जाते हों। हमने अपने बागों और जंगलों में गिरगिट को धरती पर दौड़ते और रंग बदलते देखा होगा। हमने अपने कमरे की छत और दीवारों पर भी छिपकली को दौड़ते और कीट-पतंगों को पकड़ते देखा होगा। हमारा इनसे दिन-रात का नाता है। यही नहीं, खेत-खलिहान हो या अर्धजलमग्न भूमि अथवा मरुस्थल, सरट हर जगह पाये जाते है।

सरटों की अधिकांश जातियां स्थल पर रहती हैं। झाड़ियों के झुरमुट में पत्थरों के नीचे या गड्ढों में ये छिपे पड़े रहते हैं। कुछ सरट पेड़ों पर भी रहते हैं। अपनी लचीली पूंछ को वे वृक्षों की टहनियों में लपेट लेते हैं और आराम से उनमें लटके रहते हैं।

अधिकांश लोगों का विचार है कि सभी गिरगिट विषैले होते हैं और इनका काटना घातक सिद्ध होता है, लेकिन आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि गिरगिट की

केवल एक जाति ही विषैली होती है। इसके अलावा गिरगिट की किसी भी जाति में विष नहीं होता।

गिरगिट का रंग

'गिरगिट की तरह रंग बदलना' हमारा एक मुहावरा बन गया है। तो गिरगिट रंग बदलता है, और कहते हैं कि जिस स्थान पर वह होता है उसी स्थान के रंग के अनुरूप अपना रंग बदल लेता है। लेकिन वास्तव में यह बात नहीं है। अपनी इच्छा से गिरगिट कभी भी रंग नहीं बदल सकता। हरी पत्तियों के बीच बैठकर उसका रंग लाल हो सकता है और लाल फूलों के बीच रहकर वह काला भी बन जाता है। वास्तव में रंगों का यह परिवर्त्तन गिरगिट की इच्छा से नहीं होता, यह तो प्रकृति की आत्मचालित व्यवस्था होती है। गिरगिट का रंग उसके मनोभावों के परिवर्तन के साथ ही बदलता रहता है। तापमान और प्रकाश में परिवर्त्तन के साथ भी गिरगिट के रंग बदलते हैं।

गिरगिट की त्वचा के नीचे अनेक छोटे-छोटे कोष्ठ होते हैं। इन कोष्ठों की अनेक शाखाएँ होती हैं और ये एक वृक्ष की टहनियों की तरह सारी त्वचा के नीचे फैली रहती हैं। इन्हीं कोष्ठों और इनकी शाखाओं में एक पदार्थ होता है जिसे 'पिगमेन्ट' या 'रंग' कहते हैं। जब गिरगिट अकस्मात् किसी गर्म या ठण्डे स्थान में जाता है या उत्तेजित और भयभीत होता है तो इसके कोष्ठों के ये रंग एक जगह से दूसरी जगह घूमने लगते हैं। यदि ये रंग त्वचा की सतह की ओर आते हैं तो गिरगिट का एक विशेष रंग हो जाता है। जैसे-जैसे ये रंग त्वचा से दूर भागते हैं वैसे-वैसे गिरगिट के रंगों में भी परिवर्त्तन होता जाता है। इस प्रकार कुछ ही देर में उसके कई रंग बदल जाते हैं। कभी उसका रंग लाल होता है, कभी कत्थई तो कभी हल्का हरा। जब [illegible] त उत्तेजित होता है तो वह अपने गले के चारों ओर एक घेरा भी बना [illegible] व आप समझ गये होंगे कि गिरगिट के रंग बदलने का वास्तविक कारण

सरट

क्या है।

सरटों की पूंछ

अपनी छत या दीवारों पर दौड़ती बिना पूंछ की छिपकली आपने अवसर देखी होगी। आप सोचते होंगे कि किसी शत्रु के साथ महाभयंकर युद्ध में इसकी यह

छिपकली की पूंछ काटता पक्षी

पूंछ कट गई होगी या किसी दरवाजे आदि के बीच फंस जाने के फलस्वरूप उसकी यह दशा हुई होगी, लेकिन वास्तव में बात यह नहीं है। अपनी पूंछ को त्याग देना कुछ सरटों की विशेषता है। अपनी पूंछ का त्याग वे शत्रुओं से अपनी रक्षा के लिए करते हैं। इनकी पूंछ में एक विशेषता है। ये इसे कहीं से भी मरोड़कर तोड़ सकते हैं। जब कोई शत्रु सरट पर हमला करता है और उसकी पूंछ पकड़ लेता है तो अपने बचाव के लिए सरट स्वयं ही पूंछ को मरोड़कर तोड़ देता है। टूटने के बाद भी पूंछ में कुछ क्षणों तक जीवन शेष रहता है और वह इधर-उधर फुदकती रहती है। इससे सरट का शत्रु सोचता है कि सारा सरट ही उसके कब्जे में है, और वह निश्चिन्त होकर पूंछ को पकड़े रहता है। इसी बीच अवसर पाकर सरट किसी सुरक्षित स्थान में पहुंच जाता है और इस तरह शत्रु से अपनी रक्षा कर लेता है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि कुछ ही महीनों में उसकी कट पूंछ फिर

ज्यों-की-त्यों निकल आती है, अन्तर केवल इतना होता है कि पहले से उसका आकार कुछ छोटा रह जाता है। इससे भी आश्चर्य की बात यह है कि इस काल में उन्हें ऐसा कोई अनुभव नहीं होता जैसा हाथ-पांव या दूसरा कोई अंग कट जाने से होता है। इस अवधि में सरट साधारण रूप से अपना जीवन व्यतीत करता रहता है।

कुछ सरटों की पूंछ बड़ी लम्बी और मजबूत होती है। जब कोई शत्रु इन पर हमला करता है तो ये अपनी लम्बी और ताकतवर पूंछ से चाबुक की तरह उस पर प्रहार करते हैं और उसके छक्के छुड़ा देते हैं।

कुछ दूसरे सरटों को प्रकृति ने ऐसे अंग दिये हैं जिनकी सहायता से वे अपनी रक्षा कर लेते हैं। इन सरटों में सींगों वाले सरटों का नाम लिया जा सकता है।
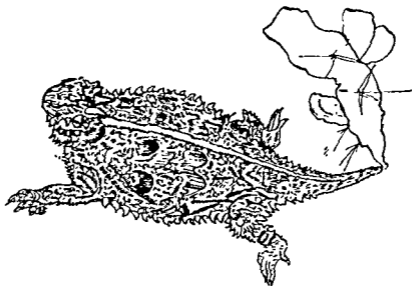
सींगों वाला सरट

इनके सिर के पिछली ओर या गरदन पर अनेक बड़े और नुकीले सींग होते हैं। ये सींग बाज़ों, उल्लुओं और दूसरे बड़े सरटों से इनकी रक्षा करते हैं। यही नहीं, जब ये सींग वाले सरट किसी शत्रु को देखते हैं तो मुलायम रेत के भीतर घुस जाते हैं।

की परीक्षा इसकी सहायता से नहीं करता। कीड़े को देखकर यह धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ती है और फिर लपककर उसे अपनी जीभ में चिपका लेती है।

छिपकली छत पर कैसे चलती है ?

आपने छिपकली को सीधी और चिकनी दीवारों तथा छत पर चलते देखा होगा। आप सोचते होंगे कि यह छत पर बिलकुल उलटी होकर कैसे चल लेती है। इसके लिए प्रकृति ने इसे विशेष सुविधाएँ प्रदान की हैं। इसकी अंगुलियों के निचले भाग में चिपकने वाली चकत्तियाँ होती हैं जिनकी सहायता से यह बिना गिरे या फिसले ही चिकनी-से-चिकनी और सीधी-से-सीधी दीवार पर भी चढ़ सकती है। ये चिपकने वाली चकत्तियाँ कोई चिपकने वाला पदार्थ पैदा नहीं करती, बल्कि इन पर छोटे-छोटे छिलके और रुएँ होते हैं। इन्हीं की सहायता से छिपकली छत और दीवार पर चिपकी रहती है।

छिपकली का विष

आम लोगों का विश्वास है कि छिपकली विषैली होती है। उनका यह भी मत है कि इसके काटने से इतनी पीड़ा होती है कि आदमी मर भी जाता है। बहुत-से लोग तो इसे छूना भी खतरनाक मानते है, लेकिन ये सब धारणाएँ निराधार हैं। छिपकली न तो विषैली होती है और न ही इससे कोई खतरा हो सकता है। यह हमें किसी तरह का कोई नुकसान भी नहीं पहुँचाती।

सरटों के अंडे

सरट अक्सर लम्बे अण्डे देते हैं। ये एक पतले आवरण से ढके रहते हैं। एक बार में शायद ही कभी 20 से अधिक अण्डे देता हो। छिपकली तो एक

बार में एक या दो अण्डे ही देती है। मादा सरट जहाँ अण्डे देती है, उन्हें वहीं छोड़ देती है। वे 8-10 सप्ताह तक वहीं पड़े रहते हैं और वहीं उनसे शिशु उत्पन्न होते हैं, किन्तु सरटों के कुछ वंश ऐसे भी हैं जो अण्डों के स्थान पर बच्चे पैदा करते हैं।

कुछ प्रमुख सरट

आधुनिक युग में मिलने वाले सरटों का आकार प्रायः छोटा होता है किन्तु इनकी शक्लें बड़ी विचित्र हैं। आस्ट्रेलिया के एक झालरदार सरट को देखिए। यह कितना विचित्र दिखाई देता है। इसकी लम्बाई 8-10 इंच होती है। [illegible]

[illegible] सरट

[illegible]

सबसे बड़ा सरट

आज के युग का सबसे बड़ा सरट 'कोमोडो दानव' कहलाता है। यह प्रशान्त महासागर के एकान्त कोमोडो द्वीप में पाया जाता है। इसकी लम्बाई लगभग 10 फुट होती है। यह इतना बड़ा होता है कि कुत्ते के आकार के जानवरों को उठाकर भाग जाता है और उन्हें देखते-ही-देखते चट कर जाता है। इसे देखकर अनायास ही करोड़ों वर्ष पूर्व के उन दानवसरटों की याद हो आती है, लेकिन साथ ही यह जानकर आश्चर्य होता है कि यह तो उनकी किसी बहुत छोटी जाति का वंशज है।

उड़ाकू गिरगिट

गिरगिट उड़ते भी हैं, यह सुनकर आपको आश्चर्य होगा। उड़ने वाले गिरगिटों के शरीर के दोनों ओर चमड़ी की एक परत होती है। आवश्यकता के समय यह गिरगिट

उड़ाकू गिरगिट

इस परत को छतरी की तरह फैला लेता है। पहले यह किसी वृक्ष की ऊँची टहनी पर चला जाता है। फिर वहाँ से एक जोर की छलांग लगाकर अपनी चमड़ी को फैला लेता है और उसके सहारे अपने शरीर को साधता दूर तक निकल जाता है।

इसका आकार लगभग 15 इंच होता है। यह एशिया के उष्ण कटिबंधीय प्रदेशों में पाया जाता है।

एक चौड़ी-सी झालर फैला लेता है। जब यह झालर पूरी फैल जाती है तो इसका सिर अपने साधारण आकार से तिगुना दिखाई देने लगता है। उस समय इसकी शक्ल इतनी भयानक होती है कि इसके शत्रु इसके पास आने का साहस नहीं करते। इसमें एक और विशेषता है। कभी-कभी यह चार टांगों के स्थान पर हमारी-आपकी

कोमोडो सरट

तरह दो पांवों पर भी चलता है। यदि आप उसे दो पांवों पर चलता देखें तो क्या सचमुच ही आपको आश्चर्य नहीं होगा ?

सबसे बड़ा सरट

आज के युग का सबसे बड़ा सरट 'कोमोडो दानव' कहलाता है। यह प्रशान्त महासागर के एकान्त कोमोडो द्वीप में पाया जाता है। इसकी लम्बाई लगभग 10 फुट होती है। यह इतना बड़ा होता है कि कुत्ते के आकार के जानवरों को उठाकर भाग जाता है और उन्हें देखते-ही-देखते चट कर जाता है। इसे देखकर अनायास ही करोड़ों वर्ष पूर्व के उन दानवसरटों की याद हो आती है, लेकिन साथ ही यह जानकर आश्चर्य होता है कि यह तो उनकी किसी बहुत छोटी जाति का वंशज है।

उड़ाकू गिरगिट

गिरगिट उड़ते भी हैं, यह सुनकर आपको आश्चर्य होगा। उड़ने वाले गिरगिटों के शरीर के दोनों ओर चमड़ी की एक परत होती है। आवश्यकता के समय यह गिरगिट

उड़ाकू गिरगिट

इस परत को छतरी की तरह फैला लेता है। पहले यह किसी वृक्ष की ऊँची टहनी पर चला जाता है। फिर वहाँ से एक जोर की छलांग लगाकर अपनी चमड़ी को फैला लेता है और उसके सहारे अपने शरीर को काफी दूर तक निकल जाता है।

इसका आकार लगभग 15 इंच होता है। यह एशिया के उष्ण कटिबंधीय प्रदेशों में पाया जाता है।

एक चौड़ी-सी झालर फैला लेता है। जब यह झालर पूरी फैल जाती है तो इसका सिर अपने साधारण आकार से तिगुना दिखाई देने लगता है। उस समय इसकी शक्ल इतनी भयानक होती है कि इसके शत्रु इसके पास आने का साहस नहीं करते। इसमें एक और विशेषता है। कभी-कभी यह चार टांगों के स्थान पर हमारी-आपकी

कोमोडो सरट

तरह दो पाँवों पर भी चलता है। यदि आप उसे दो पांवों पर चलता देखें तो क्या सचमुच ही आपको आश्चर्य नहीं होगा?

सबसे बड़ा सरट

आज के युग का सबसे बड़ा सरट 'कोमोडो दानव' कहलाता है। यह प्रशान्त महासागर के एकान्त कोमोडो द्वीप में पाया जाता है। इसकी लम्बाई लगभग 10 फुट होती है। यह इतना बड़ा होता है कि कुत्ते के आकार के जानवरों को उठाकर भाग जाता है और उन्हें देखते-ही-देखते चट कर जाता है। इसे देखकर अनायास ही करोड़ों वर्ष पूर्व के उन दानवसरटों की याद हो आती है, लेकिन साथ ही यह जानकर आश्चर्य होता है कि यह तो उनकी किसी बहुत छोटी जाति का वंशज है।

उड़ाकू गिरगिट

गिरगिट उड़ते भी हैं, यह सुनकर आपको आश्चर्य होगा। उड़ने वाले गिरगिटों के शरीर के दोनों ओर चमड़ी की एक परत होती है। आवश्यकता के समय यह गिरगिट

उड़ाकू गिरगिट

इस परत को छतरी की तरह फैला लेता है। पहले यह किसी वृक्ष की ऊँची टहनी पर चला जाता है। फिर वहाँ से एक जोर की छलांग लगाकर अपनी चमड़ी को फैला लेता है और उसके सहारे अपने शरीर को साधता दूर तक निकल जाता है।

इसका आकार लगभग 15 इंच होता है। यह एशिया के उष्ण कटिबंधीय प्रदेशों में पाया जाता है।

मगर

आपने नदियों के किनारे रेत में या नदी के भीतर पानी में थोड़ी-सी थुथनी बाहर निकाले मगर को देखा होगा। जब यह रेत में पड़ा होता है तो लकड़ी का एक लट्ठा-सा दिखाई देता है। पानी में तैरते समय इसकी पीठ का थोड़ा-सा भाग भी पानी के ऊपर देखा जा सकता है, शेष सारा भाग पानी के भीतर डूबा रहता है।

प्रायः सभी मगर अर्ध-जलजीवी होते हैं। कभी वे नदी के तट पर आकर
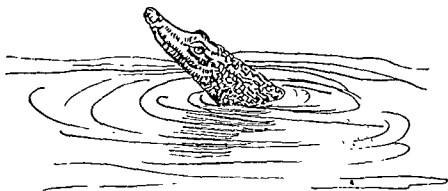
पानी पर मुंह निकाले मगर

धूप सेकते हैं तो कभी नदी या समुद्र के गहरे जल में शिकार के लिये भाग-दौड़ किया करते हैं। अधिकांश मगर उष्ण तथा अर्ध-उष्ण कटिबन्धों में पाये जाते हैं। इनका बड़े शल्कों से ढका होता है। इसकी पूंछ के ऊपरी सिरे पर आरी की तरह ी झालर-सी होती है। इन शल्कों और झालर के नीचे कड़ी हड्डियों की तह । ये हड्डियां इतनी मजबूत होती हैं कि मगर को गोली मारी जाय तो वह

भी इस पर विशेष असर नहीं करती। मगर के पेट की खाल भी बहुत मोटी और मजबूत होती है। आपके जूते और सूटकेस मगर के पेट की खाल से ही बनते हैं। मजबूती में हाथी और गेंडे की खाल भी इसका मुकाबला नहीं कर सकती।

पेट में पानी क्यों नहीं भरता ?

मगर समुद्र या नदी के तल तक चला जाता है और वहा भी आराम से तैरता रहता है। आपके मन में प्रश्न उठेगा कि पानी के भीतर रहने पर भी उसके पेट में पानी क्यों नहीं भरता ? दूसरे जलजीवी जीवों की तरह प्रकृति ने इसके शरीर की रचना भी विशेष ढंग से की है ताकि यह पानी मे सुविधा से तैर सके। इसके गले की नली में एक प्रकार का पर्दा-सा रहता है। जब मगर मुह खोलता है तो यह पर्दा स्वयं ही इस तरह बन्द हो जाता है कि फिर उसके पेट मे एक बूंद पानी जाने का भी खतरा नही रहता। यही नहीं, इन्हें पानी के भीतर सांस लेने में भी कोई कठिनाई नही होती। इसकी नाक के छिद्र का भीतरी द्वार बहुत गहराई में होता है, जिससे पानी इसके फेफड़ों तक भी नही पहुँच सकता।

आंख, दांत और जीभ

मगर पानी के भीतर रहकर भी देख सकता है। इसके लिए भी इसे एक विशेष सुविधा प्राप्त है। इसकी उभरी हुई और हल्के रंग की आंखों के भीतर एक पारदर्शक झिल्ली होती है। पानी के भीतर पहुँचते ही यह इस झिल्ली को आंखों पर चढ़ा लेता है। इससे इसकी दृष्टि मे भी कोई अन्तर नहीं पड़ता और पानी से इसकी आंखों की रक्षा भी हो जाती है। यह थोड़े गदले पानी में भी साफ और दूर तक देख सकता है।

मगर के दांत और जबड़े बड़े मजबूत और पैने होते हैं। जब मगर मुंह बन्द करता है तो इसके दो दांत सदा ही बाहर निकले रहते हैं। इसके दोनों जबड़ों ©

मगर

आपने नदियों के किनारे रेत में या नदी के भीतर पानी में थोड़ी-सी थुथनी बाहर निकाले मगर को देखा होगा। जब यह रेत में पड़ा होता है तो लकड़ी का एक लट्ठा-सा दिखाई देता है। पानी में तैरते समय इसकी पीठ का थोड़ा-सा भाग भी पानी के ऊपर देखा जा सकता है, शेष सारा भाग पानी के भीतर डूबा रहता है।

प्रायः सभी मगर अर्ध-जलजीवी होते हैं। कभी वे नदी के तट पर आकर

पानी पर मुंह निकाले मगर

धूप सेकते है तो कभी नदी या समुद्र के गहरे जल में शिकार के लिये भाग-दौड़ किया करते हैं। अधिकांश मगर उष्ण तथा अर्ध-उष्ण कटिबन्धों में पाये जाते हैं। इनका शरीर बड़े शल्कों से ढका होता है। इसकी पूंछ के ऊपरी सिरे पर आरी की तरह दांतों की झालर-सी होती है। इन शल्कों और झालर के नीचे कड़ी हड्डियों की तह रहती है। ये हड्डियां इतनी मजबूत होती हैं कि मगर को गोली मारी जाय तो वह

भी इस पर विशेष असर नहीं करती। मगर के पेट की खाल भी बहुत मोटी और मजबूत होती है। आपके जूते और सूटकेस मगर के पेट की खाल से ही बनते हैं। मजबूती में हाथी और गैंडे की खाल भी इसका मुकाबला नहीं कर सकती।

पेट में पानी क्यों नहीं भरता?

मगर समुद्र या नदी के तल तक चला जाता है और वहां भी आराम से तैरता रहता है। आपके मन में प्रश्न उठेगा कि पानी के भीतर रहने पर भी उसके पेट में पानी क्यों नहीं भरता? दूसरे जलजीवी जीवों की तरह प्रकृति ने इसके शरीर की रचना भी विशेष ढंग से की है ताकि यह पानी में सुविधा से तैर सके। इसके गले की नली में एक प्रकार का पर्दा-सा रहता है। जब मगर मुंह खोलता है तो यह पर्दा स्वयं ही इस तरह बन्द हो जाता है कि फिर उसके पेट में एक बूंद पानी जाने का भी खतरा नहीं रहता। यही नहीं, इन्हें पानी के भीतर सांस लेने में भी कोई कठिनाई नहीं होती। इसकी नाक के छिद्र का भीतरी द्वार बहुत गहराई में होता है, जिससे पानी इसके फेफड़ों तक भी नहीं पहुंच सकता।

आंख, दांत और जीभ

मगर पानी के भीतर रहकर भी देख सकता है। इसके लिए भी इसे एक विशेष सुविधा प्राप्त है। इसकी उभरी हुई और हल्के रंग की आंखों के भीतर एक पारदर्शक झिल्ली होती है। पानी के भीतर पहुंचते ही यह इस झिल्ली को आंखों पर चढ़ा लेता है। इससे इसकी दृष्टि में भी कोई अन्तर नहीं पड़ता और पानी में इसकी आंखों की रक्षा भी हो जाती है। यह मोटे गदले पानी में भी साफ और दूर तक देख सकता है।

मगर के दांत और जबड़े बड़े मजबूत और पैने होते हैं। [illegible]
करता है तो इसके दो दांत सदा ही बाहर निकले रहते हैं

दांतों की दो पंक्तियां होती हैं। यदि एक बार कोई शिकार मगर के जबड़ों की पकड़ में आ जाय तो उसका छूट निकलना असम्भव होता है।

मगर की जीभ की रचना भी बड़ी विचित्र है। वह निचले जबड़े से पूरी तरह जुड़ी रहती है, किन्तु उसे ऊपर-नीचे करना सम्भव होता है। मगर अपनी जीभ को बाहर नहीं निकाल सकते।

पांव और पूंछ

मगर के पांव बत्तखों की तरह झिल्लीदार और पंजे वाले होते हैं। इसके अगले पांवों में नाखूनों वाली पांच अंगुलियां होती हैं, लेकिन पिछले पांवों में अंगुलियों की संख्या केवल चार ही रहती है। मगर के पांव बहुत छोटे और दुर्बल होते हैं। इनकी सहायता से यह भूमि पर अधिक तेज नहीं दौड़ सकता इसलिए इसके हमले से बड़ी आसानी से बचा जा सकता है। लेकिन पानी के भीतर मगर की चाल देखने लायक होती है। पानी में यह अपनी लम्बी, चपटी और शक्तिशाली पूंछ की सहायता से तैरता है।
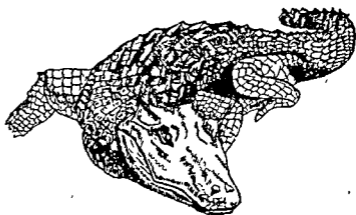
मगर के पांव और पूंछ

अपनी पूंछ से यह शत्रु पर हमला करने का काम भी लेता है। इसकी सहायता से यह शत्रु पर इतने जोर का हमला करता है कि इसकी चपेट में आ जाने पर फिर किसी का बच निकलना कठिन हो जाता है। कभी-कभी तो इसकी मार से छोटी-मोटी नावें तक उलट जाती हैं।

मगर का भोजन

मगर एक खूंखार और मांसाहारी जीव है। इसका मुंह बहुत चौड़ा और फैलने वाला होता है। यही कारण है कि मगर छोटे-छोटे शिकारों को तो समूचा ही निगल जाता है। जब मगर छोटा होता है तो वह छोटे-छोटे कीड़ों और मक्खियों को अपना आहार बनाता है। कुछ बड़ा होने पर वह मछली, मेंढक तथा जल के दूसरे जीवों को खाना शुरू करता है। इसके बाद तो हिरण हो या घोड़ा, बकरी हो या भेड़, वह किसी को भी नहीं छोड़ता।

मगर अधिकतर रात में ही शिकार पकड़ता है। यह बड़ा चालाक जानवर है। यह नदी के किनारे बिना हिले-डुले चुपचाप पड़ा रहता है। इसे देखकर लगता है मानो यह गहरी निद्रा में सो रहा है। लेकिन जब कोई जीव इसके पास से गुजरता है तो यह उस पर एकदम झपट पड़ता है और उसे अपने जबड़ों में दाबकर नदी में कूद जाता है। वहाँ यह उसे पानी में डुबो-मारकर खा जाता है।

मगर के अंडे

बरसात के शुरू में मगरी अण्डे देती है। इनका आकार मुर्गी के अण्डों से दूना होता है। एक बार में एक मगर 20 से 90 तक अण्डे दे सकती है। मगरी रेत में लगभग दो फीट गहरा एक गढ़ा खोदकर अपना घोंसला बनाती है और उसी में अपने अण्डे देती है।
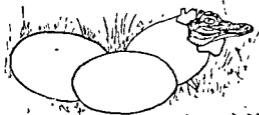
बहुत-सी जगह मगरी घास-फूस की ढेरी लगाकर घोंसला बनाती है और उसमें अण्डे रख देता है। अण्डे देने के बाद मगरी उनसे कोई वास्ता नहीं रखती। धूप से ही इनके अण्डे सेये जाते हैं। जब अण्डे फूटते हैं और उनसे बच्चे निकलते हैं तो वे एक प्रकार की आवाज पैदा करते हैं। इस आवाज को सुनकर मगरी

उन्हें घोंसलों से बाहर निकाल लेती है और उन्हें लेकर पानी में चली जाती है

बड़े मगर : छोटे मगर

संसार में मगर की जितनी भी जातियाँ पाई जाती हैं, उनमें सबसे ल
मगर समुद्र में रहने वाली जाति का होता है। इसका वैज्ञानिक नाम 'क्रोकोडाइ
पोरोसस' है। इस जाति के मगरों की लम्बाई लगभग 33 फीट तक होती है।
मनुष्यभक्षी होता है। इसका रंग काला या भूरा होता है।

संसार का सबसे छोटा मगर 'कैमन' जाति का है। यह दक्षिणी अमेरि
में पाया जाता है। इसकी लम्बाई केवल 4 फीट होती है। इसकी ऊपरी प
फूली हुई और सिकुड़न वाली होती है।

भारतीय मगर

भारत की अनेक छोटी और बड़ी नदियों में बहुत से मगर पाये जाते हैं
देखने में ये मगर बड़े भयंकर और विशाल होते हैं। ऐसे स्थानों में, जहां नदियां ते
नहीं बहतीं, ये बड़े आराम से रहते हैं।

उत्तर भारत में पाये जाने वाले मगर कुछ डरपोक होते हैं। आदमी को देखते ही ये नदी में गोता लगा जाते हैं। ये मगर मछलियों तथा दूसरे जल-जन्तुओं को ही अपना भोजन बनाते हैं, लेकिन कुछ मगरों को मनुष्य पकड़ने का भी चस्का पड़ जाता है।

भारत में 30 फुट तक लम्बे मगर पाये जाते हैं। यदि मगर को पकड़ लिया
ता है तो वह भोजन का त्याग कर देता है। लेकिन महीनों के उपवास के बाद
फिर भोजन ग्रहण करना आरम्भ कर देता है।